पूर्वाह्न 11.08 बजे

मंत्रि-परिषद में विश्वास का प्रस्ताव

[अनुवाद]

प्रधान मंत्री (श्री इन्द्र कुमार गुजराल) : अध्यक्ष महोदय, आपकी अनुमति से मैं प्रस्ताव करता हूं :—

"कि यह सभा मंत्रि परिषद में विश्वास व्यक्त करती है।"

[हिन्दी]

अध्यक्ष जी, जब मैं सदन के सामने यह बात रख रहा हूं तो मुझे इस बात का पूरा अहसास है कि ऐसे मौके पर जब आज सरकार शुरू हो रही है, उस वक्त मैं आने वाले दिनों की कुछ बातें करूं तो शायद अच्छा भी लगता है और शायद वह काबिले सराही भी हो। लेकिन दरअसल हिन्दुस्तान में हम जब भी पॉलिसियों और आने वाले दिनों की बातें करते हैं तो हमारा पीछे मुड़कर देखना जरूरी भी हो जाता है और आसान भी। और खासकर इस पचासवें साल में जब हिन्दुस्तान आजादी का पचासवां साल मना रहा है, न जाने सदन में मेरे जैसे कितने लोग बैठे हैं, चन्द्रशेखर जी सामने नजर आ रहे हैं और कुछ ऐसे भाई होंगे, जिन्होंने हिन्दुस्तान में आजादी के आने की जंग में हिस्सा लिया था। वह एक अजीब समां था।

कल ही मैं गांधी स्मृति में गया था, जब गांधी जी के कुछ कागज बोम्बई जी ने वहां से लाने का इन्तजाम किया था, जो पेपर्स आज देश को दिये गये हैं। गांधी जी की बात करते-करते मुझ अपनी जिंदगी के कुछ बाब नजर आने शुरू हुए। मैंने उस वक्त बात की थी और शायद दोहरा भी दूं कि पहली दफा मैंने गांधी जी के दर्शन 11 साल की उम्र में किये थे। लाहौर में कांग्रेस का सैशन हो रहा था, गांधी जी वहां पर आये थे और बतौर बच्चे के मैंने उनकी बात सुनी थी, उस वक्त यह कहते हुए कि हिन्दुस्तान को आजादी अब मिल के रहेगी। वह एक ऐसा मौका था, जिसने मेरी सोच पर एक मोहर लगाई और बात मैंने गांधी जी के मुताल्लिक कल और कही थी। गांधी जी ने जब डांडी मार्च शुरू होने की बात की, तो मेरे अपने खानदान में मेरे माता-पिता दो लोग उसके साथ जुड़े हुए थे। जिस दिन सत्याग्रह करना था, मेरे पिताजी से उससे पहली शाम कुछ दोस्त मिलने आये थे, वे ऐसे मित्र थे, क्योंकि मेरे पिता वकील थे, उनके साथ उनका रहना, बैठना, उठना था और मुझे एक बात हमेशा मेरे कानों में गूंजती है। उनके एक मित्र ने उनसे कहा था कि आप क्या सोचते हैं, आप तो पढ़े-लिखे आदमी हैं, वह बूढ़ा तो पागल हो गया है, उसका ख्याल है कि मुट्ठी भर नमक बनाने से यह बड़ी सरकार चली जायेगी। वे बातें मेरे कानों में आती हैं, उस मुट्ठी भर नमक ने हिन्दुस्तान की तवारीख को बदल दिया था, क्योंकि उस मुट्ठी भर नमक ने सिर्फ नमक नहीं बनाया था, उसने हमारी परम्पराओं को ऊपर एक नया मोड़ दिया था। उसने हम लोगों से देश वालों से एक वायदा लिया था कि वे लोग उस धर्म पर कायम रहेंगे, जिस धर्म का नाम गांधी जी ने सत्याग्रह रखा था, उस धर्म पर वे कायम रहेंगे जिस धर्म का नाम गांधी जी ने नॉन वायलेंस रखा था, उस धर्म के ऊपर कायम रहेंगे, जो मित्रता की बात थी।

कुछ अखबारों ने मेरे मुताल्लिक पिछले दिनों लिखा कि मुझे लाहौर का नोस्टेल्जिया हैं। जी हां, है, क्योंकि मेरा पहला नोस्टेल्जिया वह है, जो मैंने कांग्रेस का सैशन देखा था और जब कभी मैं लाहौर जाता हूं तो तीन जगह मुझे बहुत याद आती हैं। एक वहां की सैण्ट्रल जेल थी, जहां मेरे पिता जेल में थे, एक वहां की महिलाओं की जेल थी, जहां मेरी मां कैद थीं और एक बच्चों की जेल थी, जिसमें मुझे रखा गया था। उन तीन जगहों पर जब मैं जाता हूं तो फिर उन तमाम परम्पराओं को याद करता हूं और सोचता हूं कि अब जो वायदे हमने किये थे, हम कितने उनको पूर्ण कर चुके हैं, कितने नहीं कर पाये हैं।

जवाहर लाल जी ने इसी सदन में, इसी जगह शायद बैठकर एक बहुत बड़ी बात हमारे सामने कही थी, जिसका नाम उन्होंने ट्रिस्ट विथ डैस्टिनी दिया था। अब जवाहर लाल जी की बात करना छोटा मुंह बड़ी बात है। अब यह तो मैं कह सकता हूं कि जवाहर लाल जी ने जो वायदे किये और जिसके ऊपर वे कायम रहे, उसी से हमारी पालिसियां बनी हैं और मैं अगर फिर छोटा मुंह बड़ी बात कहूं, तो पालिसियां जो यह सरकार बनायेगी, जब तक आप इसको रखेंगे, उसी से चलेगी, जो ट्रिस्ट विथ डैस्टिनी जवाहर लाल जी ने की थी। वे वायदे देश के वायदे हैं, दरअसल वे वायदे कांग्रेस के वायदे नहीं हैं, वे वायदे किसी एक परम्परा के, किसी एक खास सम्प्रदाय के नहीं हैं, उसी वायदे में अटल जी भी शामिल हैं, उसी वायदे में जसवन्त सिंह जी भी शामिल हैं, चन्द्रशेखर जी भी शामिल हैं और गिनता जाऊं, कितने नाम गिनवाऊं कि मैं आज शाम तक गिनता रह जाऊं, शायद उसको पूरा न कर पाऊं।

आज एक ही बात मैं आपसे कहने के लिए खड़ा हुआ हूं, जब मैं आपसे एहतमाद का वोट मांगता हूं तो वोट इस बात के लिए मांगता हूं, उस वायदे को पूरा करने के लिए और गवाही देता हूं, अपने तमाम पास्ट की और गवाही इस बात की देता हूं कि उन परम्पराओं में, जिसमें सैकुलरिज्म की जड़ भरी हुई थी।

एक बात मुझे और याद आई। कांग्रेस का सैशन हो रहा था, मेरे पिता चूंकि कांग्रेस में थे, मुझे भी साथ ले गये, मैं छोटा बच्चा था तो वहां कांग्रेस ने पहली दफा रेजोल्यूशन पास किया था कि यह देश डाइवर्सिटीज का देश है, इसकी यूनिटी ऑफ डाइवर्सिटी रहेगी। इस देश में धर्म अलग-अलग हैं, भाषाएं अलग-अलग हैं, कपड़े पहनने के ढंग अलग-अलग हैं, लेकिन फिर भी हम एक हैं। उस एकता को कायम रखने का जो वायदा कांग्रेस सैशन ने उस वक्त किया था और कांग्रेस उस जमाने की पार्लियामेंटरी पार्टी नहीं थी,

कांग्रेस तो एक प्लेटफार्म था, एक मूमैंट थी, एक तहरीक थी जो देश को आजादी की तरफ ले जा रही थी। वे वादे आज भी कायम हैं। उसका नाम आगे चलकर हमने सेक्युलरिज्म का दे दिया, परिवर्तन का दे दिया। यह कहना शुरू किया कि देशवासी जो भी हैं, चाहे किसी भी धर्म के मानने वाले हों, चाहे किसी जगह के रहने वाले हों, चाहे कोई भाषा बोलते हों, किसी भी धर्म के पीछे जाते हों, हम सब में हम

अलग भी हैं और एक भी हैं। इस एकता के नाम पर मैं दूसरा वादा आपसे करता हूं। वह वादा यह है कि धर्मनिरपेक्षता की जितनी भी परम्पराएं हैं, उनको यह सरकार कायम करने की कोशिश करेगी। लेकिन एक बात ध्यान रखिए, सेक्युलरिज्म रिवाइविलिज्म से खड़ा नहीं होता। पीछे की तरफ मुड़कर देखेंगे तो हमारी जड़ें मजबूत हैं, हमारी संस्कृति अपनी है और उस संस्कृति पर हमें नाज़ भी है, फख्र भी है, लेकिन उसके साथ-साथ आगे भी हम देखते हैं। यही बात जवाहर लाल जी अक्सर कहा करते थे, वह नाम पहले है साइंटिफिक टैम्पर का, कि हम किसी तरह साइंटिफिकली सोचें। जब कोई बिजली का बल्ब जलता नजर आए तो उसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। बच्चे को समझाना चाहिए कि बिजली जलती कैसे है। इसलिए उसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसीको आज सांइटिफिक टैम्पर कहते हैं। आज से बहुत साल पहले, गांधी जी से भी पहले इस देश में बुद्ध आए थे। बुद्ध जी ने एक बात कही थी, उसको मैं हमेशा याद रखता हूं।

[अनुवाद]

> "मुझ पर विश्वास न करें क्योंकि मैं ऐसा कहता हूं। इसलिए विश्वास न करें क्योंकि अमुक-अमुक किताब में ऐसा लिखा है। हमेशा प्रश्न करें।"

जिज्ञासु मस्तिष्क ही 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' कहलाता हैं।

[हिन्दी]

और उसकी तरफ मेरा आपसे तीसरा वादा है कि देश को साइंटिफिक टैम्पर की तरफ ले जाना है।

मेरा एक वादा आपसे और है, वह यह है कि यह देश गरीबों का है, कुचले हुए लोगों का है, जिनको सदियों से इन्साफ नहीं मिला। जिनको अछूत होने का कसूर माना गया है। जिनको हाथ लगाना तो एक तरफ, जिनके साए को भी कभी देख लें तो समझते थे कि धर्म भ्रष्ट हो गया। उसको दूर करने की हम पिछले पचास साल से कोशिश कर रहे हैं, कामयाबी मिली है, लेकिन उतनी नहीं मिली। छुआछूत देश से खत्म नहीं हुआ। कोई यह कहे कि आज अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों को अपना हक मिल गया, यह कहना सच नहीं होगा। इसलिए मेरी सरकार की एक कोशिश यह भी होगी कि उन पिछड़े हुए लोगों को जिनको सदियों से इन्साफ नहीं मिला, चाहे उसका नाम सोशल जस्टिस रख लीजिए या सोशलिज्म रख लीजिए, कुछ भी नाम रख लीजिए, एक बात जरूर है और वह यह है कि हिन्दुस्तान आगे नहीं बढ़ेगा जब तक देश में रहने वाले तमाम लोग किसी भी जाति के हों, किसी भी धर्म के हों, किसी इतिहास के हों, हम एक खड़े होंगे, तब देश आगे बढ़ेगा, वरना नहीं बढ़ेगा।

एक बात और ध्यान रखिए कि इस देश में एक और परम्परा हम लोगों ने डाली है। वह यह कि हम लोग सोचते हैं किसी को उसका हक मिल जाए तो हम उस पर दया कर रहे हैं। किसी के ऊपर दया नहीं की जा सकती। यह देश सबका सांझा है। यह हाउस इस लोकतांत्रिक देश की नुमाइंदगी करता है, यह हाउस उन परम्पराओं की नुमाइंदगी करता है जिनको हिन्दुस्तान आगे बढ़ाना चाहता है और बढ़ाने की कोशिश में लगा रहेगा, और उस कोशिश में मैं थोड़ा सा दान दे पाऊं, मेरी उम्र का यह जो हिस्सा है उसमें उसी वादे को पूरा करना चाहता हूं। इसलिए देश को आगे बढ़ाने के लिए एक वादा और करना चाहता हूं वह यह है कि इस देश में हम लोगों ने नई किस्म की परम्पराएं डाली हैं। हम लोग आपस में मिलकर जहां बुनियादी बातें होती हैं, उनमें नेशनल कंसेंसस करते हैं। चाहे विदेश नीति की बात हो, उसमें भी हम नेशनल कंसेंसस की बात करते हैं, हमें इकोनॉमिक पालिसी में भी इसके लिए कोशिश करनी चाहिए।

अध्यक्ष जी, डेमोक्रेसी बुनियादी तौर पर इस चीज का नाम नहीं है कि हम हर चीज में नफा देखें। डेमोक्रेसी इस चीज का नाम है कि अक्सर चीजों में हमारी एक राय है। किसी न किसी चीज पर हमारी एक राय बन सकती है, बिगड़ सकती है। लेकिन एक बात को ध्यान में रखें, इस मुल्क में मेरे भाई चाहे इस तरफ बैठे हों, चाहे उस तरफ बैठे हों, हम एक दूसरे के दुश्मन नहीं हैं। हम एक दूसरे की राय से इख्तिलाफ रख सकते हैं, लेकिन एक दूसरे की मुखालफत नहीं करते हैं। हम लोगों में वही रिश्ता बना रहे, यही तरीका है लोकतंत्र को चलाने का। मेरी तरफ से यही कोशिश रहेगी कि यह परम्परा कायम रखी जाए। यह परम्परा अगर कायम रहेगी तो देश आगे बढ़ पायेगा। आज देश बढ़ते-बढ़ते कोलीशन के युग में चला गया है। मेरी पीछे बैठे हुए मेरे दोस्त, मेरे कोलीशन में मेरे साथ हैं। आज हर जगह कोलीशन है। हम उस तरफ देखते हैं अटल जी की सरकारों में भी कोलीशन नजर आता है। इस तरफ देखते हैं तो इस तरफ भी कोलीशन नजर आता है।

मिलीजुली सरकार बनाना आसान है लेकिन मिलीजुली सरकार के कल्चर को सीखने में टाइम लगता है। आज जब सरकारें बनती हैं और बिगड़ती हैं तो मैं उसे पौजिटिव नजर से देखता हूं और मेरी पौजिटिव नजर यह है कि आखिरकार हम लोगों ने आपस में कोलिएशन सरकार बनाने के पोलिटिकली तो फैसले कर लिए हैं लेकिन एक दूसरे के साथ व्यवहार कैसा हो, वादे किए जाएं तो निभाए जाएं, किस तरह से हम लोग एक दूसरे के साथ बैठें और कोई ऐसा सलूक न करें कि बाद में फिर अफसोस हो। कई दफा मायूसियां भी हो रही हैं। हमें भी हो रही हैं, आपको भी हो रही हैं और सबको हो रही हैं। लेकिन इस मायूसी से मायूस होने का काम नहीं है। इन मायूसियों से भी हमें रास्ता निकालना है।

हमारे सामने कई ऐसी समस्याएं हैं जिनके ऊपर चाहे इधर बैठे हुए लोग हों या उधर बैठे हुए लोग हों, यदि एक तरह से आवाज नहीं उठाएंगे तो बात नहीं बनेगी। मेरे भाई सोज जी बैठे हुए हैं, कश्मीर की नुमाइंदगी करते हैं। आज कश्मीर ने एक नया मोड़ ले लिया है। वहां इलेक्शन हो चुके हैं, सरकार बन चुकी है और आज लोगों की नुमाइंदगी कर रहे हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि दुख-दर्द खत्म हो गया है। दुख-दर्द अभी भी वहां है। इसलिए उसमें भी मैं, चाहे इस तरफ बैठे हुए भाई लोग हैं या उस तरफ बैठे हुए भाई लोग हैं और जब भाई कहता हूं तो बहनें भी उसमें शामिल हैं।

मैं जब सुषमा जी का बात कर रहा हूं तो मैं महिलाओं की बात करना चाहता हूं। इस देश में महिलाओं को उनका हक नहीं मिला है।

[श्री इन्द्र कुमार गुजराल]

यह असलियत की बात है। हम लोग चाहे कहते रहें कि हमारे धर्म में यह लिखा है, हमारे धर्म में वह लिखा है लेकिन घर, समाज और राजनीति में महिलाओं को उनका हक नहीं मिला है। मेरी कोशिश यह होगी कि महिलाओं को उनका हक दिया जाए और उनको उनका हक मिलना चाहिए। यही बात गांधी जी ने कई दफा कही थी। सन् 1937 में जब पहली दफा सरकारें बनी थीं।...*(व्यवधान)* आप बात क्यों कर रहे हैं?...*(व्यवधान)*

कुमारी उमा भारती (खजुराहो) : आपकी बात पर महिलाएं खुश हो रही हैं।...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : एक दूसरी बात और कह रहा हूं। जब 1937 में पहली दफा अंग्रेजों के यहां रहते हुए सरकारें बनी थी, उस समय गांधी जी ने दो बातों पर जिद की थी। एक बात उन्होंने कही थी कि कोई ऐसी सरकार नहीं बनेगी जिसमें महिला मिनिस्टर नहीं होगी। दूसरी बात यह कही थी कि कोई सरकार ऐसी नहीं बनेगी जिसमें कोई अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का मिनिस्टर नहीं होगा। यह भी गांधी जी का ही कहना है जो हमको निभाना है। मैं ये बातें बुनियादी तौर पर इसलिए कर रहा हूं...*(व्यवधान)* एक वादा मैं आपसे और भी कर रहा हूं और वह वादा यह है कि हम लोगों को यह नहीं भूलना चाहिए कि देश की आबादी कितनी तेजी से बढ़ रही है। मेरे कमरे में तो अभी वह क्लॉक नहीं है लेकिन पहले प्रधान मंत्री जी के कमरे में जब मैं जाता था तो वहां एक पोपुलेशन क्लॉक रखी रहती थी। जब मैं पोपुलेशन का करेंट डाटा देखकर आता था तो मुझे रात भर नींद नहीं आती थी। आज देखा जाता है कि हमारी आबादी 95 करोड़ से ऊपर हो गई है। हम लोगों ने जवानी बहुत कुछ कहा है कि हम यह करेंगे, हम वह करेंगे। कुछ कामयाबी हुई है। लेकिन उतनी नहीं हुई है जितनी होनी चाहिए। एक बात का और ध्यान रखिए कि यह फैमिली प्लानिंग की कामयाबी तभी होगी जब महिलाओं को उनका हक मिलेगा। महिलाओं की अनपढ़ता तब तक खत्म नहीं होगी, जब तक कि हम महिलाओं को स्कूल और कॉलेज में भेजने के लिए समाज में वातावरण पैदा नहीं करेंगे। मेरा आपसे एक वादा यह भी है और मैं उस तरफ जाने की कोशिश करूंगा...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : जब प्रधान मंत्री बोल रहे होते हैं तो आप ध्यानपूर्वक सुनें।

[हिन्दी]

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : एक बात का और ध्यान रखिए। एक दफा स्वीडन में कांफ्रेंस हुई थी और उसमें एनवॉयरनमेंट के बारे में बात उठी थी। उस जमाने में मैं हाउसिंग मिनिस्टर था। मुझे भी इंदिरा जी के साथ जाने का मौका मिला था। एक बात वहां निकलकर आई थी। वह यह थी कि पौल्यूशन और पॉवर्टी ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और जब तक हम पॉवर्टी में डूबे रहेंगे, हमारे एनवॉयरनमेंट में इम्प्रूवमेंट नहीं हो सकता। इसलिए जब तक गरीबी की बात चलेगी तक तक हम लोग अनपढ़ता भी खत्म नहीं कर पाएंगे। ये दोनों बातें हैं। एक दफा किसी ने कहा था :—

[अनुवाद]

> "मुझे एक ऐसे देश का उदाहरण दें जहां साक्षरता है। लेकिन वह पिछड़ा हो या ऐसा देश बतायें जहां निरक्षता हो लेकिन वह विकसित हो।"

[हिन्दी]

एक वायदा हमको यह भी करना पड़ेगा कि हम लिट्रेसी की तरफ जाने के लिए खास ध्यान देंगे। मैं लम्बी बातें नहीं कहूंगा, एक-दो बातें कह कर खत्म करूंगा।

एक बात यह है कि मेरा इस सरकार से संबंध रहा है, जो आज से पहले थी। उसने एक फॉरन-पालिसी बनाई थी, उस फॉरन-पालिसी पर मुझे आप सब की तरफ से सपोर्ट मिल रही है। फॉरन-पालिसी वही रखी जाएगी। उसी को हम आगे बढ़ायेंगे। उसी से नए किस्म के रिश्ते कायम करेंगे। आज भी मैं जब अपने दफ्तर में पांच मिनट के लिए बैठा, मैं उनके नाम नहीं गिनवाऊंगा, तो हमारे पड़ोसी मुल्कों से मुझे किस किस्म के मैसेज और किस किस्म के प्यार के टेलीफोन आ रहे हैं। वह बदले हुए माहौल का और बदले हुए वातावरण का हिस्सा है, जिसकी हम सराहना करते हैं। मैं यह नहीं कहता हूं कि वह मैंने किया है, वह आपकी कन्सैंसस ने किया है और कन्सैंसस को कायम रखना इस मुल्क की बुनियादी पालिसी होगी। आज आपकी पालिसियों के ऊपर भी वही कन्सैसस हमको बनाना भी है और उसी को आगे बढ़ाना भी है। कन्सैंसस हमारे मुल्क में सोशियल जस्टिस के ऊपर बन चुका है। खुशकिस्मती से आज ऐसी कोई भी पार्टी नहीं है, जो आज इस बात को मानती हो। हमें उसके लिए और कदम उठाने हैं। मैं एक-दो वायदे और करना चाहता हूं।

एक वायदा यह कि जब तक मैं इस सरकार में सरबराह हूं, तब तक यह सरकार ट्रांसपेरेन्ट सरकार रहेगी। यह सरकार पूरी तरह से कोशिश करेगी कि यह एकाउन्टेबल रहे। एकाउन्टेबल आप सब, आप जब भी हमारे कपड़े उतारेंगे, मुझे उसमें शिकायत नहीं होगी। जब भी आप यह कहेंगे कि हमने कहीं गलती की है—कई गलतियां ईमानदारी से होती हैं, तो उनके लिए तो मैं आपसे इन्डलजैंस मांगूंगा—और नीयत खराब होने की वजह से गलती की है, तो उसके लिए बिना शक आप क्रिटिसाइज करिए और उसके लिए मेरा हर साथी जो गलती करेगा, उसकी जिम्मेदारी मैं खुद ओढ़ूंगा और अपने साथी, चाहे इस तरफ के हों या उस तरफ के, मैं इस बात के लिए उसको प्रोटैक्ट नहीं करूंगा। साथ ही साथ इस मुल्क में विच-हंटिंग नहीं होने दूंगा। वह वातावरण नहीं आएगा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : अध्यक्ष महोदय, विच-हंटिंग नहीं होने दूंगा, यह कहने की जरूरत क्या है। क्या विच-हंटिग हो रहा है? अभी तक हुआ है? आप इसको रोकना चाहते हैं या यह कह कर कि विच-हंटिंग नहीं होने देंगे, जो मामले पड़े हैं, उन पर पर्दा डालना चाहते हैं?

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : अटल जी, जुम्मा-जुम्मा आठ दिन, मुझे तो 24 घन्टे आए हुए हैं। मैंने फाइलें नहीं देखी हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री प्रमोद महाजन (मुम्बई-उत्तर पूर्व) : इसको आप दो बार कह चुके हैं।...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : मैंने फाइलें अभी देखी नहीं है। अगर आप मुझसे यह कहते कि बंगलादेश की फाइल क्या है, तो मैं बता देता। अगर आप यह पूछते कि सीटीबीटी क्या है, तो मैं बता देता। लेकिन जो सवाल आपने किए हैं, मुझे कागज देख लेने दीजिए। इसलिए वायदे कर रहा हूं, कागज देखेन के बाद, जो भी आप मुझसे पूछेंगे, उसके लिए मेरी जबावदेही आपके पास रहेगी।

[अनुवाद]

श्री संतोष मोहन देव (सिल्चर) : जब कांग्रेस दल ने इस पार्टी को सर्मथन दिया तब इसने कभी भी इस दल को उन मामलों में जो न्यायालय में लम्बित हो, निर्णय लेने को नहीं कहा। हमारा यही कहना है कि हमने कभी भी ऐसा निर्णय नहीं किया है। यह लोग अनावश्यक ही ऐसा कह रहे हैं।

[हिन्दी]

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : अध्यक्ष जी, असल में मेरे ख्याल से संतोष मोहन देव जी को मेरा हिन्दी में बोलना समझ नहीं आया। मैंने कभी यह नहीं कहा है, मुझे से किसी ने सिफारिश की है। मैंने कभी यह नहीं कहा है कि मैंने किसी की तरफ उंगली उठाई है। न जाने उन्होंने समझा...*(व्यवधान)* मैं हिन्दी में या उर्दू में बोल रहा हूं। हमारी आज की जुबान एक और तरह की है। न मैं इसे हिन्दी कह सकता हूं...*(व्यवधान)* मैं जिस जुबान में बात कह रहा हूं, वह बात वह है, जिसे कम्युनिकेशन की जुबान कहते हैं और मैं उसी नाते आप से बात कह रहा हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया इस तरह से बाधा न डालें।

[हिन्दी]

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : मैं एक बात और कह दूं कि इस देश की बुनियाद, इस देश की जड़, इस देश का गौरव हिन्दुस्तान के किसान से है। हिन्दुस्तान के किसान के साथ जब तक सरकार का रिश्ता जुड़ा रहेगा, उसके हितों और कल्याण की तरफ जब तक ध्यान रहेगा तब तक यह सरकार रहेगी और मजबूत रहेगी। मैं आज अपने किसान भाईयों से, उन भाईयों से जो मिल में काम करते हैं, उन भाईयों से जो सारा दिन मेहनत से, मजदूरी से टोकरी उठा कर रात-दिन के लिए रोटी कमाते हैं उनकी तरफ सरकार का पहले से ज्यादा ध्यान रहेगा, यह भी मेरा आपसे एक वायदा है। मैं और लम्बी बात नहीं कहूंगा, शाम को जब सब भाई कह चुकेंगे,

[अनुवाद]

महोदय, मैं उम्मीद करता हूं कि शाम को आप मुझे एक और मौका देंगे और तब मैं उन प्रश्नों का जवाब दूंगा।

[हिन्दी]

इस वक्त मैं सिर्फ यही कहना चाहता हूं, सबसे बड़ी बात यह है कि हिन्दुस्तान के सामने चेलैंज है—स्टेबिल्टी का, स्टेबिल्टी इंटरनल और स्टेबिल्टी एक्सटरनल। इंटरनल स्टेबिल्टी तो सोशल जस्टिस से, सेक्यूलरिजम से और एक-दूसरे का ध्यान रखने से पैदा होगी और एक्सटरनल स्टेबिल्टी हम सबको मिल कर बात करने से, कंसेंसस से होगी। इसलिए मैं बुनियादी बात कह कर खत्म करता हूं। यह सरकार चलाई जाएगी जब तक मुमकिन हो सकेगा और शायद मुमकिन से भी कुछ ज्यादा चलाएंगे। यह तभी होगा जब हम लोग कंसेसस के साथ बात करेंगे। हमारे बगल में मेरे दोस्त चिदम्बरम जी बैठे हैं और बात खत्म करने से पहले मैं उनका नाम लेना चाहता हूं।

[अनुवाद]

और मुझे उम्मीद है कि अनुवाद के माध्यम से मेरा संदेश उन तक पहुंच रहा है।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : हम उन्हें वहां भेज देंगे।

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : तब मैं अंग्रेजी में बोलूंगा। अंग्रेजी में बोलते हुए मैं उनसे अनुरोध करता हूं कि कृपया वापस आकर अपना पद्भार संभाल लें।...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : वह पहले यहीं से बोले थे। अब वह मेरे बगल में बैठे हैं...*(व्यवधान)* उन्हें वहां भेजा जाएगा...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : यहां उनका स्वागत है।

श्री ए॰सी॰जोस (इदुक्की) : उनके उधर जाने में श्री सोमनाथ चटर्जी ही एक मात्र अड़चन हैं...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : दूसरी बात यह है कि मूपनार जी से मेरी अपील है, मैं आज इस हाउस में भरी सभा में कहा रहा हूं उनको कुछ लोगों से नाराजगी हो सकती है, किसी ने कोई गुस्ताखी भी की होगी। मैं उनके यहां गया भी था, आज सुबह भी गया था और मैंने उनको पंजाबी का एक मुहावरा कहा था। वह यहा था, हमारे यहां कहते हैं कि—"करे दाढ़ी वाला, पकड़ा जाए मूंछों वाला।" आप हमारे पीछे क्यों, मैंने क्या किया।...*(व्यवधान)*

डा॰ मुरली मनोहर जोशी (इलाहाबाद) : प्रधान मंत्री जी, यहां उल्टा है—किया मूंछों वाले ने है और पकड़ा दाढ़ी वाला गया है। ...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : मुझे पूरी आशा है मेरी इस अपील का जवाब दिया जाएगा। मैं बहुत आभारी हूं और फिर कहता हूं कि जो तहरीक आपके सामने रखी है मुझे उम्मीद और आशा है कि सारा हाउस मुझे सपोर्ट करेगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।